Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE **Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos**
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Jai Maa

Chintpurni Chalisa

श्री गणेशाय: नम:

जय मां छिन्नमस्तिका

माता चिन्तपूरणी चालीसा

माता जी के चालीसा का नियमित पाठ सच्चे मन से करने से जीवन में कभी भी दुख नहीं मिलता। चिन्ता से मुक्ति, मन को शान्ति व हर कार्य में सफलता मिलती है। नियम से पाठ करने पर भक्त महामाई का आर्शीवाद प्राप्त करता है

श्री गणेशाय: नम:

जय मां छिन्नमस्तिका

जय मां चिन्तपूरणी चालीसा

मूल-मंत्र

''ओइम ऐं हीं कलीं श्री चामुण्डाय विच्चै:''

चित में वसो चिन्तपूरणी,
छिन्न मस्तिका मात ।१।
सात बहन की लाडली,
हो जग में विख्यात ।२।

माईदास पर की कृपा,
रूप दिखाया श्याम ।३।

सबकी हो वरदायनी,
शक्ति तुम्हें प्रणाम ।४।

छिन्नमस्तिका मात भवानी,
कलिकाल में शुभ कल्याणी ।५।

सती आपको अंश दिया है,

चिन्तपूरणी नाम किया है ।६।

चरणों की है लीला न्यारी,

चरण को पूजे हर नर- नारी ।७।

देवी देवता हैं नतमस्तक,

चैन न पाये भजे न जब तक ।८।

शान्त रूप सदा मुस्काता,

जिसे देख आनन्द आता ।९।

एक ओर कालेश्वर साजे,

दूसरी ओर शिवबाड़ी विराजे ।१०।

तीसरी ओर नारायण देव

चौथी ओर मचकूंद महादेव ।११।

लक्ष्मी नारायण संग विराजे,
दस अवतार उन्हीं में साजे ।१२।

तीनों द्वार भवन के अन्दर,
बैठे ब्रहमा, बिष्णु व शंकर ।१३।

काली, लक्ष्मी, सरस्वती मां,
सत, रज, तम से व्याप्त हुई मां ।१४।

हनुमान योद्धा बलकारी,
मार रहे भैरव किलकारी ।१५।

चौंसठ योगिनी मंगल गावें,
मर्दंग छैने महंत बजावे ।१६।

भवन के नीचे बाबड़ी सुन्दर,
जिसमें जल बहता है झर-झर ।१७।

सन्त आरती करें तुम्हारी
तुम्हें पूजते हैं नर नारी ।१८।

पास है जिसके बाग निराला,
जहां है पुष्पों की वनमाला ।१९।

कंठ आपके माला विराजे,
सुहा- सुहा चोला अंग साजे ।२०।

सिंह यहां संध्या को आता,
छिन्नमस्तिका शीश नवाता ।२१।

निकट आपके है गुरूद्वारा,
जो है गुरू गोविन्द का प्यारा ।२२।

रणजीत सिंह महाराज बनाया,
तुम्हें स्वर्ण का छत्र चढ़ाया ।२३।

भाव तुम्ही से भक्ति पाया,

पटियाला मन्दिर बनवाया ।२४।

माईदास पर कृपा करके,

आई होशियारपुर (ऊना) विचर के ।२५।

अठूर क्षेत्र मुगलों ने घेरा,

पिता माईदास ने टेरा ।२६।

अम्ब क्षेत्र के पास में आये,

दो पुत्र कृपा से पाये ।२७।

वंश माई ने फिर पुजवाया,

माईदास को भक्त बनवाया ।२८।

सौ घर उसके हैं अपनाये,

सेवारत हैं जो हर्षाये ।२९।

तीन आरती है मंगलमय,

प्रातः, मध्य और संध्यामय ।३०।

असोज चैत्र मेला लगता,

पर सावन में आनन्द भरता ।३१।

पान ध्वजा- नारियल चढ़ाऊँ

हलवा, चना का भोग लगाऊं ।३२।

छत्र व चुन्नी शीश चढ़ाऊँ,

माला लेकर तुम्हें ध्याऊँ ।३३।

मुझको मात विपद ने घेरा,

जय मां जय मां आसरा तेरा ।३४।

ज्वाला से तुम तेज हो पाती,

नगरकोट की छवि है आती ।३५।

नयना देवी तुम्हें देखकर
मुस्काती है मैया तुम पर ।३६।

अभिलाषा मां पूरन कर दो,
हे चिन्तपूरणी मां झोली भर दो ।३७।

ममता वाली पलक दिखा दो,
काम, क्रोध, मद, लोभ हटा दो ।३८।

सुख दुःख तो जीवन में आते,
तेरी दया से दुःख मिट जाते ।३९।

चिन्तपूरणी चिन्ता हरणी,
भय नाशक हो तुम भय हरणी।४०।

हर बाधा को आप ही टालो,
इस बालक को आप संभालों ।४१।

तुम्हारा आर्शीवाद मिले जब,
सुख की कलियां खिलें तब ।४२।
कहां तक तुम्हारी महिमा गाऊँ,
द्वार खड़ा हो विनय सुनाऊँ ।४३।
चिन्तपूरणी मां मुझे अपनाओ,
'सतीश' को भव पार लगाओ।

दोहा

चरण आपके छू रहा हूँ, चिन्तपूरणी मात।
लीला अपरंपार है, हो जग में विख्यात॥

मां चिन्तपूरणी की आरती

जय चिन्तपूरणी माता, चिन्ता हरो माता,
जीवन में सुख दे दो, कष्ट हरो माता ।१।
ऊँचा पर्वत तेरा, झण्डे झूल रहे,
करें आरती सारे, मन में फूल रहे ।२।
सती के शुभ चरणों पर, मन्दिर है भारी,
छिन्नमस्तिका कहते, सारे संसारी ।३।
माईदास एक ब्राह्मण, स्वप्न दरस दिये,
पूजा पिण्डी ध्याकर, आनन्द भाव किये ।४।
बरगद पेड़ है दर पर, सुख भण्डार भरे,
भक्त मोली पेड़ पे बांधे, जय–जयकार करें ।५।
कन्या गाती दर पर, मधुर स्वरों में जब,
जिनको सुनके चिन्ता, मन की हटे मां तब ।६।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, छत्र चुन्नी संग में,
चन्दन, इत्र गुलाबजल, भेंट चढ़ें अंग में ।७।
चिन्तित जीवन की मां, तुम हो रखवाली,
सेवक आरती करता, कर में लिए थाली ।८।
जय माता चिन्तपूरणी, जय–जय मां छिन्नमस्तिका।